15 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

स्वदर्शन चक्रधारी बन

विश्व-कल्याणकारी होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी हूँ...

➳ _ ➳ मैं रूहानी आत्मा

→ रूहानी सैर करते हुए पहुँच जाती हूँ..

- रूहों की नगरी में..
- अपने रूहानी बाबा के पास...

→ अपने अनादि स्वरुप में स्थित हो जाती हूँ..

→ अपने स्वधर्म में टिक जाती हूँ..

→ ज्ञान, गुण, शक्तियों के सागर में डुबकी लगाकर

- ज्ञान स्वरुप, प्रेम स्वरुप, शक्ति स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ..

➳ _ ➳ मैं आत्मा धीरे-धीरे नीचे उतरती हूँ.. सतयुग में...

→ सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण देवताई स्वरुप..

→ सोने, हीरे, जवाहरातों, सुख-समृद्धि से भरपूर स्वर्णिम दुनिया..

- 21 जन्मों तक सतयुग, त्रेतायुग में
- अपना पार्ट बजाती हुई मैं आत्मा..

➳ _ ➳ फिर देख रही हूँ अपने पूज्य स्वरुप को..

→ मंदिरों में लम्बी-लम्बी कतारों में लगी हुई भीड़..

→ एक दर्शन पाने को व्याकुल भक्त गण..

→ सबको वरदान देकर

- शुद्ध मनोकामनाओं को पूर्ण करती
- मंदिर में विराजमान मैं देवी..

➳ _ ➳ अपने ब्राहमण स्वरुप का अनुभव करती मैं आत्मा..

→ विस्मृति के कारण स्वयं को भूली हुई मैं आत्मा..

→ स्वयं परमात्मा परमधाम से नीचे आकर

- स्मृति दिला रहे हैं
- नर से नारायण बनाने की शिक्षा दे रहे हैं
- मास्टर नालेजफुल बना रहे हैं

→ स्व का नालेज प्राप्त कर स्वराज्य अधिकारी बन

- भविष्य में चक्रवर्ती राजा बन रही हूँ

➳ _ ➳ फिर अपने फ़रिश्ते स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ..

→ अपने सारे बोझ, सारी चिंताएं बाबा को देकर..

- लाइट होकर लाइट बन उड़ चलती हूँ वतन में..

→ वतन में बैठे हैं बापदादा मेरे ही इन्तजार में..

- वरदानों और खजानों से मुझे सम्पन्न बना रहे हैं

→ मैं फरिश्ता लाइट हाउस बन चमक रहा हूं..

➢➢ मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मैं फ़रिश्ता बापदादा के साथ विश्व की परिक्रमा कर रहा हूँ...

→ ऊँची स्टेज पर स्थित होकर

- चारों ओर के नजारों को देख रहा हूँ..

→ बाबा सारे विश्व का दृश्य दिखा रहे हैं..

- सब प्रकार की आत्माओं को देख रहा हूँ..

- सबका कल्याण कर रहा हूँ..

➳ _ ➳ भक्त आत्माओं का कल्याण..

→ अपने ईष्ट देव को पुकारते हुए भक्त..

→ बिचारे ढूंढ़ रहे हैं, भटक रहे हैं, चिल्ला रहे हैं..

→ भिन्न-भिन्न प्रकार के भक्तों की लाइन लगी है..

→ मैं फ़रिश्ता बाबा से शक्तियों को लेकर

- सभी भक्तों पर प्रवाहित कर रहा हूँ..

- सुख, शांति की किरणों को फैला रहा हूँ..

→ सबके दुःख, दूर हो रहे हैं..

→ सब सुख, शांति और आनंद से भरपूर हो रहे हैं..

- सबको सच्चा ठिकाना मिल रहा है..

➳ _ ➳ धर्म आत्माओं का कल्याण...

→ अनेक प्रकार के नाम, वेष और विधियों का धार्मिक बाजार

→ वैरायटी प्रकार के आकर्षण करने वाले साधनों को अपनाये हुए..

→ कोई खूब खा पी रहा.. कोई खाना छोड़ के तपस्या कर रहा..

→ मैं कल्याणकारी मास्टर परमात्मा होने के स्वमान में स्थित होकर

- सभी धर्म आत्माओं का कल्याण कर रहा हूँ..

- विश्व का उद्धारमूर्त बन सबका उद्धार कर रहा हूँ..

➳ _ ➳ विज्ञानी आत्माओं का कल्याण..

→ नए-नए इन्वेन्शन निकालते हुए

→ माइक, हैडफोन जिनके कारण

- हम बाबा के महावाक्य सुन रहे हैं..

→ साथ-साथ भविष्य में भी

→ नई दुनिया में सहयोग देने वाले वैज्ञानिक..

→ कितनी मेहनत, कितना दिमाग लगा रहे हैं..

■ और प्रालब्ध हमको दे रहे हैं..

→ भले नास्तिक हैं पर मेरे अपने भाई हैं..

■ इन सभी वैज्ञानिकों को आफरीन और थैंक्स दे रहा हूँ..

➳ _ ➳ देश और विदेश के राज्य अधिकारियों का कल्याण..

→ बापदादा देश-विदेश की राजनीति का दृश्य दिखा रहे हैं..

→ राज्य हिल रहा है..

→ नाम और शान के भूखे राजनीतिज्ञ..

→ अभी- अभी बेताज बादशाह और

→ अभी-अभी वोट के भिखारी..

■ रहम दिल बन इन सब पर रहम की दृष्टि डाल रहा हूँ..

➳ _ ➳ चारों ओर की आम पब्लिक का कल्याण..

→ बहुत प्रकार की वैरायटी आत्मायें..

→ चारों ओर ‘‘चाहिए'' ‘‘चाहिए'' के गीत बज रहे हैं..

→ महाज्ञानी, महादानी, वरदानी, मास्टर दाता बन

■ सबको अंचली दे रहा हूँ..

→ सत्य पिता का सत्य ज्ञान देकर

■ चाहिए, चाहिए के गीतों को समाप्त कर रहा हूँ..

→ अब चारों ओर ‘पाना था सो पा लिया’ के गीत बज रहे हैं..

→ मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा

■ रोज विश्व का चक्र लगाकर

■ विश्व कल्याण कर रही हूँ...